Topic - 25 - हल् सन्धि पूर्व सवर्ण ।

उदः स्थास्तम्भोः पूर्वस्य ।

उदः परयोः स्थास्तम्भोः पूर्वसवर्णः

सूत्रस्थ 'उदः' में विभक्ति में पञ्चमी है, अतः 'उद्' से किसी दिशा में स्थित स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होगा। वर्णों की दो ही दिशाएँ सम्भव हैं — एक पूर्व और दूसरी पर। अब यहाँ प्रश्न होता है कि क्या 'उद्' से पूर्वस्थित स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होगा अथवा 'उद्' परास्थित स्था और स्तम्भ को? इसके साथ ही साथ यह भी प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या व्यवधान-रहित पूर्व या परवर्ती स्था और स्तम्भ को पूर्वसवर्ण होगा अथवा व्यवहित पूर्व या परवर्ती स्था और स्तम्भ को?

तस्मादित्युत्तरस्य ।

पञ्चमीनिर्देशेन क्रियमाणं कार्यं वर्णान्तरेणाऽव्यवहितस्य परस्य ज्ञेयम् ।

यह परिभाषा सूत्र है।

आदेः परस्य ।

परस्य यद् विहितं तत् तस्यादेर्बोध्यम् । इति सस्य षः ।

पञ्चम्यन्त पद का उच्चारण कर जो आदेश पर के स्थान पर किया जाता है, वह आदेश पर के आदि वर्ण के ही स्थान पर होता है, सम्पूर्ण पर या पर के अन्त्य वर्ण के स्थान पर नहीं।

P.T.O

झरो झरि सवर्णे।
हलः परस्य झरो वा लोपः सवर्णे झरि।

झर् से परे झर होने पर पूर्व झर् का वैकल्पिक लोप होता है। झर् प्रत्याहार में अनुनासिक को छोड़कर सभी स्पर्श वर्ण और हकार को छोड़कर सभी उष्म वर्ण आते हैं।

रषाभ्यां नो णः समानपदे।

रषाभ्यां परो नो णः स्युः। इत्युदो दस्य तः -
उत्थानम्, उत्थ्थानम्।

प्रकृतसूत्र 'रषाभ्यां नो णः समानपदे' की दृष्टि में उदः-० सूत्र असिद्ध है, अतः उसके द्वारा सकार के स्थान पर किया हुआ थकार प्रकृत सूत्र की दृष्टि में न होने के समान है। फिर जब प्रकृतसूत्र की दृष्टि में झल्-थकार का अस्तित्व ही नहीं रहता, तब उसके स्थान पर तकार होने का प्रश्न भी नहीं उठता।

मूल स्थित

उद्+स्थानम्

उद्थ्थानम्

उद्: स्था - सूत्र से सकार थकार पूर्व सवर्ण -

उद्थानम्

झरो - - झरि सूत्र से वैकल्पिक थकार लोप

उत्थानम्

रषाभ्यां से पूर्व।